मेमने का लहू

फ्रैंकलीन के द्वारा अध्ययन

प्रकाशितवाक्य 12:7–12
फिर स्वर्ग पर लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और **अजगर** और उनके दूत उस से लड़े। (8) परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उन के लिये फिर जगह न रही।(9) और वह बड़ा **अजगर** अर्थात् वही पुराना **सांप,** जो **इब्लीस** और **शैतान** कहलाता है, और **सारे संसार का भरमानेवाला है**, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए।

- इसके बारे में यशायाह 14:12; यहेजकेल 28:12 से आगे, में भी कहा गया है।

- शैतान स्वर्ग की लड़ाई तो हार गया परन्तु आदम के साथ हुई लड़ाई में वह भरमाने के द्वारा विजयी हुआ। इसके बाद प्रकाशितवाक्य मसीह के आने के समय पर चला जाता है जहां बड़ा नाटकीय बदलाव आ गया है।

(10) फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, कि **अब** हमारे परमेश्वर का **उद्धार,** और **सामर्थ,** और **राज्य,** और उसके मसीह का **अधिकार** प्रगट हुआ है; क्योंकि **हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला,** जो **रात दिन** हमारे परमेश्वर के साम्हने **उन पर दोष लगाया** करता था, **गिरा दिया गया**।

- अब उद्धार आ चुका है! विजय प्राप्त की जा चुकी है।
  क्रूस से कुछ दिन पहले यीशु ने कहा: **अब** इस जगत का न्याय होता है, **अब** इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा। यूहन्ना 12:31

  इब्रानियों 2:14 मृत्यु के द्वारा (मेमने के लह के द्वारा) उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को **निकम्मा** कर दे। (15) और **हमें छुड़ा ले**।

- "**सामर्थ** " प्रेरितों के काम 10:38 यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और **सामर्थ** से अभिषेक किया: वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, **अच्छा करता फिरा;** क्योंकि **परमेश्वर उसके साथ था**।

- "परमेश्वर का राज्य" अपनी **सामर्थ** और **अधिकार** के साथ वापस धरती पर **लौट आया है** जो यीशु मसीह के जीवन और सेवकाई के द्वारा प्रदर्शित हुआ। हालांकि, अब वह अपने सिंहासन पर वापस लौट गए हैं।

और वह हम से कहते हैं :

मत्ती 28:18 स्वर्ग और पृथ्वी का **सारा अधिकार** मुझे दिया गया है। (19) **इसलिये तुम जाकर** ... उसके अधिकार में (20) और देखो, मैं जगत के अन्त तक **सदैव तुम्हारे संग हूं**।।

तथा: जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी **तुम्हें भेजता हूं**। यूहन्ना 20:21

- कौन मैं ??

  इब्रानियों 2: (6) मनुष्य क्या हैं ... (7) तू ने उस पर **महिमा** और **आदर** का मुकुट रखा और उसे अपने हाथों के कामों पर **अधिकार दिया**। (भजन 115:16) (8) तू ने **सब कुछ उसके पांवों के नीचे** कर दिया ... पर **हम अब तक सब कुछ उसके आधीन नहीं देखते।**

  परन्तु वह दिन आने वाला है : रोमियों 16:20 शान्ति का परमेश्वर शैतान को **तुम्हारे पांवों** से शीघ्र कुचलवा देगा।।

- **हां तुम !!!**

  आपके पास "उसका अधिकार" और "उसकी सामर्थ " है:

  प्रेरितों के काम 1:8 जब पवित्र आत्मा **तुम पर** आएगा तब **तुम सामर्थ** पाओगे; और ... तुम मेरे गवाह होगे।

  फिलिप्पियों 4:13 जो मुझे **सामर्थ देता है** उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।

  और राज्य के बारे में क्या

  यीशु ने कहा: **परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।।** लूका 17:21

  राजा तुम में है। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर **मसीह मुझ में जीवित है**: गलातियों 2:20

  कुलुस्सियों 1:26–28 उस **भेद** को जो समयों और पीढ़ियों से गुप्त रहा, परन्तु अब **उसके उन पवित्र लोगों** पर प्रगट हुआ है। (27) जिन पर **परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा**, कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की **महिमा का मूल्य** क्या है? और वह यह है, कि **मसीह** जो महिमा की आशा है **तुम में** रहता है।

- उसके शिष्यों ने यह प्रगट किया कि हमें कैसे रहना है – हमारा मिशन: लूका 9:1–2

  फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बिमारियों को **दूर** करने की **सामर्थ** और **अधिकार** दिया। (2) और उन्हें **परमेश्वर के राज्य** का प्रचार करने, और बिमारों को **अच्छा करने** के लिये भेजा।

लूका 10:1, 17–20 और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और ... भेजा। ... वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी **हमारे वश में है**। (18) उस ने उन से कहा; मैं शैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से **गिरा हुआ** देख रहा था।

जब शैतान उठे, तो **हमें** उस **अधिकार** और **सामर्थ** के द्वारा जो हमें दी गई है उसको नीचे लाना है।

(19) देखो, **मैने तुम्हे** सांपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी **सामर्थ** पर **अधिकार दिया** है; और **किसी वस्तु से** तुम्हें कुछ हानि न होगी। (20) तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि **आत्मा तुम्हारे वश में हैं**, परन्तु इस से आनन्दित हो कि **तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं**।।

- "**दोष लगाने वाला**" गद्दी से हटा दिया – गिरा दिया गया है। उसे यहां पृथ्वी पर भी **पराजित कर दिया गया** है।

  युद्ध अभी भी जारी है, हमें उस **विजय** में जो **पूर्ण** है, जो **अन्तिम** है, जो **निर्धारित** है और **जिसने जीत प्राप्त कर ली** है उसके **भरोसे, शान्ति, सामर्थ** और **अधिकार** में चलना और रहना चाहिए।

- इन सब के बावजूद वह निरन्तर हम पर "**दोष लगाता**" रहता है। क्यों? क्योंकि वह हमसे घृणा करता है। क्योंकि अब मसीह हम में है। हम राजनयिक सुरक्षा के साथ उसके राजदूत हैं और वह हमें बिना अनुमति के छू भी नहीं सकता।

- क्या उसका "दोष लगाना" उचित है? क्या हम पाप करते है? हां

- वह खुश हो कर हमारे हर एक पाप का दोष हम पर लगाता है ताकि अब उसे आक्रमण करने और फिर से हमें बन्दी बनाने की अनुमति **मिल जाए**। क्योंकि पाप उसको वैध अधिकार देता है, पाप उसका क्षेत्र है, उसका राज्य। उदाहरण : लूका 22:31

अतः हम क्या कर सकते हैं? हम कैसे विजय में कायम रह सकते है और उसमें चल सकते है?

प्रकाशितवाक्य 12:11 वे उस पर जयवन्त हुए

(1) मेम्ने के लोहू के कारण और

(2) अपनी गवाही के वचन के कारण

(3) उन्हों ने अपने प्राणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली।

(12) **इस कारण**, हे स्वर्गों, और उन में के रहनेवालों **मगन हो**; हे पृथ्वी, और समुद्र, **तुम पर हाय!** क्योंकि शैतान **बड़े क्रोध** के साथ तुम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है, कि **उसका थोड़ा ही समय और बाकी है** ।।

- जो कुछ भी उस "दुष्ट" के पास है वह उन सब का इस्तेमाल कर रहा है, और जैसे जैसे समय बीत रहा है तथा लगभग समाप्त ही हो रहा है उसकी तीव्रता बढ़ रही है।

- 1 पतरस 5:8 सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है, कि **किस को** फाड़ खाए।

हम इन सब के द्वारा जयवन्त और सुरक्षा , शान्ति, और विजय में स्थिर रह सकते हैं:

1. मेमने के **लहू** से : यीशु ने जो हमारे लिए **किया**।

   उसके लहू ने जय प्राप्त की, हमें स्वतन्त्रता दी है।

2. गवाही के हमारे **वचन** – हमारा भाग, जो हम करते हैं।

3. परमेश्वर के लिए पूरी **वचनबद्धता**, चाहे कुछ भी हो जाए – मृत्यु तक भी।

जब हम यीशु मसीह को जानते – उस पर विश्वास करते और उसकी गवाही देते हैं कि वह कौन है, जो क्रूस की उसकी मृत्यु, उसके पुनरुत्थान में और उसके लहू में हमें प्राप्त हुआ है, तब हम शैतान पर हम जयवन्त होते हैं।

यशायाह 5:13 **अज्ञानता** के कारण मेरी प्रजा बंधुआई में जाती है

होशे 4:6 **अज्ञानता** के कारण मेरी प्रजा नाश हो जाती है।

यूहन्ना 8:32 और तुम **सत्य को जानोगे**, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

दानिय्येल 11:32 **जो लोग अपने परमेश्वर को पहचानते हैं**, वे सामर्थ का कार्य करेंगे।

यीशु के लहू ने हमारे लिए क्या किया है? हमारी क्या गवाही है?

I. उसके लहू ने हमें धर्मी ठहराया है:

रोमियों 5:8–9 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी **मसीह हमारे लिये मरा**। (9) सो जब कि हम, अब **उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे**, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न **बचेंगे**? (धर्मी ठहराए जाना – भूतकालिक: जो भूतकाल में हुई घटना जिसका परिणाम वर्त्तमान में जारी है)।

- **धर्मी ठहराया जाने** का अर्थ : **धर्मी बनाना**/मुक्त करना/स्वतन्त्र कर देना/ पाप से शुद्ध होने और दोषी न पाए जाने की घोषणा। निर्दोष ठहराना

मेमने का लहू

यह इतिहास इसे समझने के लिए है:

रोमियों 5:12 इसलिये जैसे **एक मनुष्य** के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।

रोमियों 5:17–18 क्योंकि जब **एक मनुष्य** (आदम) के अपराध के कराण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो **जो लोग अनुग्रह और धार्मिकता का वरदान बहुतायत से पाते हैं** वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।(18) इसलिये जैसे **एक अपराध** सब मनुष्यों के लिये दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसे ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।

(युनानी भाषा में धार्मिकता और धर्मी ठहराए जाने के लिए एक ही शब्द है)

''पहले आदम'' के द्वारा पाप सब मनुष्यों में आ गया (रोमियों 5:12)।

''अन्तिम आदम'' के द्वारा (1 कुरि 15:45) मृत्यु का पूरा दाम चुका दिया गया (रोमियों 6:23)।

तथा ''धार्मिकता का वरदान'' सब के लिए है परन्तु दिया उन्हीं को गया ''जो अनुग्रह की बहुतायत पाते हैं''। और वे पूरी और सम्पूर्ण रीति से धर्मी ठहराए गए है तथा अनन्तकाल तक ''**जीवन** में राज्य'' करेंगे।

एक बड़ा आदान-प्रदान – यीशु, परमेश्वर का सिद्ध और पापरहित मेमना, जिसने हमारे पापों को न्याय और दण्ड सहित ले लिया तथा हमें **धर्मी ठहराए जाने** और **छुटकारे** का पूरा मुल्य स्वयं अपने **लहू** से चुका दिया। पिता ने सन्तुष्ट हो कर स्वर्ग के द्वार उनके लिए जो **विश्वास** करते और **ग्रहण** करते हैं खोल दिया।

- स्वर्ग का द्वार खुलने पर मेरा विचार यह है:

  अपने पुनरुत्थान पर वह पहले (इफिसियों 4:8–9) पृथ्वी की निचली जगहों पर उतरा, फिर वह ऊंचे पर चढ़ा, और बन्धुवाई को बान्ध ले गया जो ''इब्राहिम की गोद'' में प्रतिक्षा कर रहे पुराने नियम के सन्त लोग थे (लूका 16:22)।

उसके साथ ऊंचे पर चढ़ रहे स्वर्गदूतों ने स्वर्ग की चौकसी करने वालो से ऊंचे स्वर से पुकार कर कहा :

भजन संहिता 24:7–10 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो। हे सनातन के द्वारों, ऊंचे हो जाओ। क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा। स्वर्ग की चौकसी करने वालों ने पूछा: वह प्रतापी राजा कौन है? उत्तर था: परमेश्वर जो सामर्थी और पराक्रमी है, परमेश्वर जो युद्ध में पराक्रमी है! सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।।

मेरी गवाही प्रसिद्ध उस अंग्रेज़ी गीत के समान है :

मेरी आशा यीशु के लहू और धार्मिकता पर बनी है।

क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु – उसके लहू ने उन लोगों के लिए पाप की समस्या से निबट लिया **जो अनुग्रह और धार्मिकता का वरदान बहुतायत से पाते हैं** क्योंकि वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य (शासन, विजयी रह कर) करेंगे।

मेरी गवाही: यीशु के लहू ने मुझे धर्मी ठहराया – मैं स्वतन्त्र हूं – ऐसा कि जैसे मैंने कभी पाप ही न किया हो – मैं पाप की मज़दूरी से मुक्त हूं – और मुझे उसकी धार्मिकता दी गई है। मैं यीशु मसीह के लहू के कारण धर्मी हूं तथा मुझे अनन्त जीवन दिया गया है।

1 कुरिन्थियों 15:57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।

II. उसके लहू ने हमें छुड़ाया है

छुड़ाने का अर्थ है "किसी ऐसी वस्तु को मुल्य दे कर वापस खरीद लेना, जो मुलतः आपकी थी।"

हम परमेश्वर के थे – उस ने हमें जगत की उत्पति से पहले उस में चुन लिया (इफिसियों 1:4) – परन्तु आदम के कारण हमारा पाप और मृत्यु में जन्म हुआ – शैतान का राज्य – दास, दुष्ट के अधीनता और नियंत्रण में।

परन्तु यीशु ने शैतान के क्षेत्र के अंधकार में जा कर, हमारी **स्वतंत्रता** का मुल्य चुका कर, हमारे **छुटकारे** का दाम दे दिया।

1 पतरस 1:18–20 क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बापदादों से चला आता है उस से तुम्हारा **छुटकारा** चान्दी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ (क्यों नहीं?)। (19) पर निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात् **मसीह** के **बहुमूल्य लहू** के द्वारा हुआ।

- जिस दाम से खरीदा जाता है ... उसी से उसका मुल्य पता लगता है।
- अतः आप कितने मुल्यवान हैं?

इब्रानियों 9:12 ... अपने ही लहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और **अनन्त** छुटकारा प्राप्त किया। यह कभी बदलेगा नहीं!

न केवल प्रभु यीशु ने हमें मोल दे कर खरीद लिया परन्तु : उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्रा के राज्य में प्रवेश कराया।(14) जिस से हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है। कुलुस्सियों 1:13

तो फिर, क्या मैं इस हद तक अब तक जी रहा हूं जैसे कि मैं अन्धकार के राज्य में था?

- कुछ गंभीरता से विचार करने वाली बातें:

1 कुरिन्थियों 6:13–20 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और **तुम अपने नहीं हो?** (20) क्योंकि तुम **दाम देकर मोल** लिये गए हो, इसलिये **अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो**।। जो कुछ भी हम उसकी देह के साथ करते हैं उसके लिए परमेश्वर हमें जिम्मेवार ठहराता है।

मेमने का लहू

छुटकारे की सच्चाई और उसके महत्व की शिक्षा पवित्रशास्त्र में "मेमने के लहू" के रुप में आरम्भ से दी गई है जो मिस्र में फिरौन से परमेश्वर के लोगों के छुटकारे और स्वतन्त्र होने की ओर संकेत करता है।

निर्गमन 12:2 यह **महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ** का ठहरे; अर्थात् वर्ष का पहिला महीना यही ठहरे। (3) ... तुम ... **एक एक मेम्ना ले रखो।**

- हर एक व्यक्ति को "परमेश्वर का मेमना", यीशु मसीह को अपने उद्धार के लिए लेना है। और यह आपके कभी न समाप्त होने वाले महिनों का आरम्भ ठहरेगा।

अपने अपने **पितरों** के घरानों के अनुसार, **घराने पीछे एक एक मेम्ना ले रखो।**

- अपने पिता के घराने या परिवार के लिए एक ही मेमना।

(7) तब वे उसके **लहू** में से कुछ लेकर जिन घरों में मेम्ने को खाएंगे उनके द्वार के दोनों **अलंगों** और **चौखट** के सिरे पर लगाएं।

- जब हम **विश्वास** करते हैं कि **यीशु मसीह ही परमेश्वर का मेमना है** और **केवल उसका लहू** उद्धार दे सकता है तब हम ऐसा कर के लहू की वाचा में प्रवेश करते हैं। और इस बिन्दू पर हम अनुग्रह और धर्मरूमी वरदान बहुतायत से पाते हैं तथा यीशु मसीह के द्वारा अनन्त जीवन में राज्य। (रोमियों 5:17)

(8) वे उसके **मांस** को उसी रात आग में भूंजकर अखमीरी **रोटी ...** के साथ खाएं। यह उस दिन का परम्परागत वाचा का भोज है।

(11) उसके खाने की यह विधि है; कि **कमर बान्धे**, पांव में जूती पहिने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना; **वह तो यहोवा का पर्व होगा।**

- लहू की वाचा (अपना जीवन उसके लिए दे देना) में प्रवेश करने के बाद जहां की भी परमेश्वर हमारी अगुवाई करे या भेजे वहां जाने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए।

(2 कुरि 5:14–15)

(13) **जिन घरों में तुम रहोगे** उन पर वह **लहू** तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा

- द्वार के दोनों **अलंगों** और **चौखट** के सिरे पर लहू ... वो जगहें हैं जहां आप रहते हैं – आपकी देह।

और **मैं उस लहू को देखकर**

- लहू परमेश्वर के लिए है, वह अपने पुत्र के लहू को खोजता है।

और जब वह उसे देख लेता है ...

मैं ... **तुम को छोड़ जाऊंगा**, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूंगा, तब वह **विपत्ति** तुम पर **न पड़ेगी** और तुम **नाश** न होगे। देखें भजन संहिता 91

(23) इसलिये **जहां जहां वह ... उस लहू को देखेगा**, वहां वहां वह उस **द्वार को छोड़ जाएगा**, और नाश करनेवाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिये **न जाने देगा।** परमेश्वर हमारे जीवन के द्वार की देखभाल और रक्षा करता है।

फसह का पर्व ।हाल्लेलुय्याह

मेमने का लहू

परमेश्वर का मेमना, यीशु मसीह, अब फसह का अर्थ समझाते हैं : यूहन्ना 6:54–57

जो **मेरा मांस खाता**, और **मेरा लहू पीता** है, **अनन्त जीवन** उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लहू वास्तव में पीन की वस्तु है। जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, वह मुझ में स्थिर बना रहता है, और मैं उस में।

- हम इसको कैसे समझें? इसका क्या अर्थ है?

अन्तिम भोज पर: प्रभु यीशु ने जिस रात पकड़वाया गया **रोटी** ली।(24) और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा; कि यह **मेरी देह है**, जो तुम्हारे लिये है: मेरे **स्मरण** के लिये यही किया करो।(यह वाचा को स्मरण कराने के लिए है) (25) इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा; **यह कटोरा मेरे लहू में नई वाचा है:** जब कभी पीओ, तो मेरे **स्मरण** के लिये यही किया करो।(26) क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, **प्रचार करते** हो।1 कुरिन्थियों 11:23–26

- जब भी हम रोटी (उसकी देह) **खाते** और कटोरे में से पीते (उसका लहू) हम **प्रचार** (गवाही) करते हैं और स्वयं को यह **स्मरण** कराते हैं कि हमने प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में ग्रहण **किया** है तथा हमने उसके साथ लहू की वाचा में प्रवेश **किया**।

भजन संहिता 107: 2 यहोवा के छुड़ाए हुए **ऐसा ही कहें,** जिन्हें उसने शत्रु के हाथ से फिरौती देकर **छुड़ा लिया** है।

हमारी गवाही, कुलुस्सियों 1:13–14 में अच्छे से दी गई है:

उसी ने हमें अन्धकार के वश से **छुड़ाकर** अपने प्रिय पुत्र के राज्य **में प्रवेश कराया**। (14) जिस से **हमें छुटकारा** अर्थात् **पापों की क्षमा** प्राप्त होती है ... यीशु मसीह के लहू के द्वारा ।

1 कुरिन्थियों 15:57 परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **हमें जयवन्त करता** है।

III. उसके लहू ने हमें क्षमा किया है।

इब्रानियों 9:22 **बिना लहू बहाए क्षमा नहीं होती।।**

इफिसियों 1:7 हम को उस में उसके **लहू के द्वारा छुटकारा,** अर्थात् अपराधों की **क्षमा,** उसके **अनुग्रह के धन** के अनुसार मिला है।

इब्रानियों 9:26 उसने ... अपने ही बलिदान के द्वारा **पाप को दूर कर** दिया।

मेमने का लहू

इब्रानियों 10:17–19 मैं उन के पापों को, और उन के अधर्म के कामों को **फिर कभी स्मरण न करूंगा** और **जब** इन की **क्षमा हो गई** है, तो फिर पाप का बलिदान नहीं रहा।। सो हे भाइयो, **...** हमें **यीशु के लहू के द्वारा ...** पवित्र स्थान में प्रवेश करने का **हियाव हो गया** है।

1 यूहन्ना 3:5 तुम जानते हो, कि वह इसलिये प्रगट हुआ, कि **पापों को हर ले** जाए; और **उस में** कोई भी **पाप नहीं**। हम "मसीह में" हैं (रोमियों 8:1; 1 कुरि 1:30; 2 कुरि 5:17)

प्रकाशितवाक्य 1:5 जो **हम से प्रेम रखता** है, और जिस ने **अपने लहू के द्वारा** हमें पापों से **छुड़ाया** है।

भजन संहिता 103:10–12 उस ने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार **नहीं किया,** और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार **हम को बदला दिया** है।(11) जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, **वैसे ही उसकी करूणा** उसके डरवैयों के ऊपर **प्रबल** है।(12) **उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है,** उस ने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही **दूर** कर दिया है।

कुलुस्सियों 2:13–15 उस ने तुम्हें भी, जो **अपने अपराधों**, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में **मुर्दा** थे, उसके साथ **जिलाया** (कैसे?) , और हमारे सब अपराधों को **क्षमा किया** (उसने यह कैसे किया?)। (14) और **विधियों का वह लेख** जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था **मिटा डाला;** और उस को **क्रूस पर कीलों से जड़कर** साम्हने से **हटा दिया** है(इसका क्या परिणाम था?)। (15) और उस ने प्रधानताओं और अधिकारों को

- शैतान का कवच उसका झूठ और धोखा है। "ज्योतिमर्य स्वर्गदूत" 2 कुरिन्थियों 11:14
- उसका हथियार पाप है।

अपने ऊपर से उतार कर उन का **खुल्लमखुल्ला तमाशा** बनाया और क्रूस के कारण **उन पर जय-जय-कार** की ध्वनि सुनाई ।।

खुल्लमखुल्ला तमाशा :

एक रोमी सेनापति, अपने शत्रुओं को पराजित करने के बाद, उनके कवच, उनके हथियार, उनके वस्त्र उतार कर उन पराजित शत्रुओं को रोम की सड़कों पर चलाता था। यह उसकी विजय यात्रा तथा खुल्लमखुल्ला सार्वजनिक दृश्य होता था।

अब उसने हमें विजय दी है:

1 कुरिन्थियों 15:57 परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा **हमें जयवन्त करता** है।

रोमियों 16:20 शान्ति का परमेश्वर **शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा** देगा।।

भजन संहिता 107:2 यहोवा के छुड़ाए हुए **ऐसा ही कहें**, जिन्हें **उस ने** द्रोही के हाथ से दाम देकर **छुड़ा लिया है**।

हमे निर्भीक हो कर विश्वास करना और बोलना चाहिए, **"यीशु के लहू के द्वारा मैं शैतान के हाथों से छुड़ाया गया हूं।**

IV. उसके लहू ने हमारा मेल कराया है :

कुलुस्सियों 1:21–22 **उस ने अब** उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा **तुम्हारा भी मेल कर लिया** जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे। **ताकि** तुम्हें अपने सम्मुख **पवित्र** और **निष्कलंक**, और **निर्दोष बनाकर** उपस्थित करे।

मेल कर लेने का अर्थ : सही सम्बन्ध में पुनःस्थापित कर लेना, मित्रता में पुनःस्थापित हो जाना, शान्ति–मेल कर लेना। जो उसका आदम के साथ सम्बन्ध था, उसे पुनःस्थापित करना।

रोमियों 5:10 जब **हम बैरी ही थे,** हमारा **मेल** परमेश्वर के साथ **उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हुआ** तो उससे बढ़कर, अब मेल हो जाने पर हम उसके जीवन के द्वारा उद्धार पाएंगे।

हम बैरी थे – अपने पिता से अलग। यशायाह 59:2 क्योंकि तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम्हें तुम्हारे परमेश्वर से **अलग** कर दिया है, और **तुम्हारे पापों के कारण उसका मुख तुमसे छिप गया है** जिससे वह नहीं सुनता।

भजन संहिता 11:7 यहोवा धर्मी है, वह धर्म के ही कामों से प्रसन्न रहता है; धर्मीजन उसका दर्शन पाएंगे।।

भजन संहिता 105:4 उसके दर्शन के लगातार खोजी बने रहो!

2 कुरिन्थियों 5:17–21 परमेश्वर ने मसीह के द्वारा **हमारा मेल** अपने साथ कर लिया और **हमें मेल – मिलाप** की सेवा हमें सौंप दी है।(19) अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ **संसार का मेल मिलाप कर लिया,** और **उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया** और उस ने **मेल मिलाप का वचन हमें** सौंप दिया है।।(20) सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता है: हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि **परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो**।(21) जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर **परमेश्वर की धार्मिकता** बन जाएं।।

- **हम** सब का **मेल–मिलाप** हो गया तथा **सभी को** मेल–मिलाप की **सेवा** सौंपी गई है। हर एक विश्वासी के पास बहुत महत्वपूर्ण सेवा है तथा प्रत्येक सेवक है।
- उसने **संसार का मेल–मिलाप** अपने साथ कर लिया और **उनके विरुद्ध उनके पापों का दोष नहीं लगाया**। यह शुभ समाचार है जिसे हमें हर एक को बताना है।

1 यूहन्ना 2:2 वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, वरन सारे जगत के पापों का भी।

यूहन्ना 1:29 यूहन्ना द्वारा यीशु का परिचय : देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।

न केवलउसने सब का मेल–मिलाप कर लिया परन्तु उसने सब को मोल भी ले लिया।

2 पतरस 2:1 और जिस प्रकार उन लोगों में झूठे भविष्यद्वक्ता थे उसी प्रकार तुम में भी झूठे उपदेशक होंगे, जो नाश करनेवाले पाखण्ड का उद्घाटन छिप छिपकर करेंगे और उस स्वामी का जिस ने उन्हें मोल लिया है **इन्कार** करेंगे और अपने आप को शीघ्र विनाश में डाल देंगे।

उसने **सब का मेल-मिलाप कर लिया** और **सब को मोल ले लिया ...** सो क्या इसका अर्थ यह है कि हर एक जन स्वर्ग जाएगा? नहीं ! क्योंकि

एक मृत्यु के फल वाला पाप है :

यीशु ने पवित्र आत्मा के बारे में बताते हुए कहा: यूहन्ना 16:8-10 वह आकर **संसार** को **पाप** और धार्मिकता और न्याय के विषय में **निरूत्तर** करेगा। (9) **पाप के विषय में इसलिये कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते।** (10) और धार्मिकता के विषय में इसलिये कि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे: (11) न्याय के विषय में इसलिये कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।

- यह "मृत्यु के फल वाला पाप" है – अनन्त मृत्यु का

यह **इस प्रशन** का उत्तर देगा :

"यदि परमेश्वर, प्रेम करने वाला परमेश्वर है, तो भला वह कैसे किसी को नरक में भेज सकता है?

उत्तर : वह नहीं भेजता, लोग स्वयं अपने आपको वहां ले जाते हैं।

हमें मसीह की ओर से निवेदन करना **चाहिए**, कि वे **परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लें**।
2 कुरिन्थियों 5:20

हमें उन्हें प्रोत्साहन देना **चाहिए** कि वे **अनुग्रह** और **धार्मिकता का वरदान** बहुतायत से पाएं। रोमियों 5:17

उसके राजदूत और उसके याजक के रुप में हमारी यह जिम्मेवारी है कि हर एक को यह शुभ संदेश दें कि यीशु के लहू ने उनके लिए क्या किया है।

अनन्त जीवन हर एक उस व्यक्ति के लिए है जो – "मार्ग, सत्य और जीवन" – यीशु मसीह (यूहन्ना 14:6) पर **विश्वास करता** और **ग्रहण करता** है।

दूसरे शब्दों में : यीशु के लहू को **स्वीकारा** या **अस्वीकृत** किया जा सकता है।

मेरी गवाही:

यीशु के लहू ने मुझे **धर्मी ठहराया** है – मुझे **छुड़ाया** है – मेरे पापों को **क्षमा** किया है – और मेरे स्वर्गीय पिता और मेरे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के साथ सही सम्बन्ध में मुझे **पुनःस्थापित** किया है।

V. यीशु मसीह का लहू हमें शुद्ध करता या पवित्र बनाता है

(एक ही युनानी शब्द । 'शुद्ध करना' क्रिया है, 'पवित्र' संज्ञा है ।)

इब्रानियों 13:12 इसी कारण, यीशु ने भी शहर के फाटक के बाहर दुख उठाया, ताकि लोग **उसके लहू के द्वारा शुद्ध हो सकें** ।

हिन्दी BSI में इस प्रकार लिखा है: इसी कारण, यीशु ने **लोगों को अपने ही लहू के द्वारा पवित्र करने** के लिये फाटक के बाहर दुख उठाया । (BSI)

इब्रानियों 10:10 उसी इच्छा से **हम** यीशु मसीह की देह के **एक ही बार** बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा **पवित्र** (या शुद्ध किए गए) **किए गए** हैं ।

प्रेरितों के काम 26:18 कि वे ... पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो **मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए** हैं, मीरास पाएं ।

पवित्र या शुद्ध किए जाने के शब्द के दो अर्थ हैं ।

1. हमें केवल यीशु के लहू के द्वारा **पवित्र** (शुद्ध, स्वच्छ, धार्मिकता) बनाया गया है क्योंकि "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर **परमेश्वर की धार्मिकता** बन जाएं । । "(2 कुरि 5:21) ।

2. यह सच कि हम पवित्र है या शुद्ध किए गए हैं हमें बाकि सब से अलग करता है । आम और साधारण से अलग किए गए, और विशेष इस्तेमाल और सौभाग्य के लिए समर्पित ।

आपको पवित्र बनाया गया और बाकि सब से अलग किया गया है – इसलिए हमें इसी प्रकार जीवन बिताना चाहिए :

1 पतरस 1:14–16 और आज्ञाकारी बालकों की नाई अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के **सदृश** न बनो ।(15) पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही **तुम भी** अपने सारे चाल चलन में **पवित्र बनो** ।(16) क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं ।

आपको अलग किया गया है और विशेष रुप से इस्तेमाल किए जाने और सौभाग्य के लिए समर्पित हैं :

1 पतरस 2:9 पर तुम एक चुना हुआ वंश, और **राज–पदधारी**, याजकों का समाज, और **पवित्र** लोग, और (परमेश्वर की) निज प्रजा हो (क्यों?), **इसलिये** कि जिस ने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, **उसके गुण प्रगट करो** ।

मेमने का लहू

निर्गमन 11: 4–8 यहोवा इस प्रकार कहता है, कि आधी रात के लगभग मैं मिस्र देश के बीच में होकर चलूंगा।(5) तब मिस्र में ... सब पहिलौठे मर जाएंगे। पर इस्राएलियों के विरूद्ध, क्या मनुष्य क्या पशु, किसी पर कोई कुत्ता भी न भौंकेगा; जिस से तुम **जान लो** कि मिस्त्रियों और इस्राएलियों में **मैं यहोवा अन्तर** करता हूं। **अपने लोगों और इस संसार के लोगों के बीच।** परमेश्वर की सन्तान होने नाते आप बाकि सब से विशिष्ट हो।

यह मेमने का लहू था जिसके कारण यह **अन्तर** हुआ, जिसने उनको बाकि सब लोगों से **अलग कर दिया** तथा उन्हें **विशेष दर्जा** और **सौभाग्य** प्रदान कर दिया।

यहां एक रोचक स्थिति है जहां हम केवल अर्थ को देखते हैं,
"अलग किए जाना"

1 कुरिन्थियों 7:14 क्योंकि ऐसा पति जो **विश्वास न रखता** हो, वह पत्नी के कारण **पवित्र** ठहरता है, और ऐसी पत्नी जो **विश्वास नहीं रखती**, पति के कारण **पवित्र** ठहरती है।

- ध्यान दें : अविश्वासी जन विश्वास के द्वारा पवित्र नहीं ठहराया गया, जैसे प्रेरितों के काम 26:18 में ।
- अविश्वासी जन जब तक वह अपने पति/पत्नी के साथ वाचा में बन्धे हैं वे **अलग किए हुए** है वे अपने विश्वासी पति/पत्नी को प्राप्त सभी **सौभाग्यों** तथा **आशिषों** का आनन्द उठा सकते हैं।

यीशु का लहू अपने विश्वासी और विश्वासी के घर या परिवार के बीच में "**भेद**" करता है, उन सब को "शैतान" से बचाता है। जब तक अविश्वासी विश्वासी के साथ रहते हैं तथा उनके छाया में रहते हैं वह **सुरक्षा** और **आशिषें** पाते हैं। परन्तु यदि वे उनकी शरण से अलग चले जाएं ... तो यह "दुष्ट जन" को अवसर देता है।

(इफि 4:27, 2 कुरि 2:11, 11:14)

निर्गमन 12:13 और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर वह **लहू** तुम्हारे निमित्त **चिन्ह** ठहरेगा; अर्थात् **मैं उस लहू को देखकर** तुम को **छोड़ जाऊंगा ...**

विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच में समस्याएं और कठिनाईयां आ सकती हैं :

निर्गमन 12:37–38 तब इस्राएली रामसेस से कूच करके सुक्कोत को चले, और बालबच्चों को छोड़ वे कोई छ: लाख पुरूष प्यादे थे। (38) और उनके साथ **मिली जुली हुई एक भीड़** गई

- इब्रानी भाषा में "मिली जुली" का अर्थ है : मिश्रण, दोगली जाति, और पुराने नियम में इस शब्द का अनुवाद "अरब" है।

"मिली जुली हुई एक भीड़" का अर्थ **सच्चे विश्वासियों** और **अविश्वासियों** से है जो "मेमने के लहू" के द्वारा पवित्र ठहराए गए थे (अलग किए) तथा जो परमेश्वर के लोगों के साथ मिस्र से बाहर निकल आए थे।

- कुछ समझदार मिस्रियों ने अवश्य देखा होगा कि इस्राएल के लोग किस प्रकार विपत्तियों से बचे रहे और जब उन्होंने मिस्र छोड़ा तो वह भी उनके साथ हो लिए।

उनका देश अब गड़बड़ी में था और इस्राएलियों के परमेश्वर की अद्‌भुत सामर्थ देखकर वे भी **सुरक्षा** और **प्रबन्ध** के कारण परमेश्वर के लोगों के साथ हो लिए। परन्तु बिना इस्राएल के परमेश्वर को **ग्रहण किए** और **उसके प्रति समर्पित** हुए।

- आज बहुत से **अविश्वासी** आशिषित हैं क्योंकि वे **या तो** परमेश्वर के अधिकतर नैतिक नियमों का पालन करते हुए जीते हैं**,** या फिर विश्वासी के साथ जुड़ कर।

परन्तु हमें यह पहचानना चाहिए कि मिश्रण समस्याओं को लाता है :

गिनती 11:4 फिर जो **मिली-जुली भीड़ उनके साथ** थी वह कामुकता करने लगी; और इस्राएली भी फिर रोने और कहने लगे, कि हमें मांस खाने को कौन देगा।

- यह पद दर्शाता है कि उनके बीच में "**मिला जुला समुह** " बदलाव चाहने वाले थे जिन्होंने कुड़कुड़ाना और शिकायत आरम्भ की। वे इन कठिनाईयों के लिए बाहर निकल कर नहीं आए थे।
- जैसा 1 कुरिन्थियों 10:1-11 में दर्ज है (5) उनमें से अधिकांश से परमेश्वर प्रसन्न नहीं हुआ - वे जंगल में ही मर कर ढेर हो गए।

हम भी मिली जुली भीड़ में रहते है और अब भी रह रहे हैं :

इफिसियों 2:2-8 जन में तुम पहिले इस संसार **की रीति पर**, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात् उस **आत्मा** के **अनुसार** चलते थे, जो अब भी आज्ञा न माननेवालों में कार्य करता है। (3) **इन में** हम भी सब के सब **पहिले** अपने शरीर की लालसाओं में दिन **बिताते थे** (कुछ हद तक अब भी), और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।(4) परन्तु **परमेश्वर** ने जो **दया का धनी** है; अपने उस **बड़े प्रेम** के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया।(5) जब हम अपराधों के कारण **मरे हुए थे**, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; **अनुग्रह ही से** तुम्हारा उद्धार हुआ है।

पौलुस इस तरह के मिश्रण के बुरे परिणामों का ज़िक्र 2 कुरिन्थियों 6:14–18 में करता है :

अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? ... (17) इसलिये प्रभु कहता है, कि **उन के बीच में से निकलो और अलग रहो**; और **अशुद्ध वस्तु को मत छूओ**, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।

2 पतरस के पूरे दूसरे अध्याय में पतरस इस विषय पर बहुत कड़े शब्दों में और लम्बी बात–चीत करता है:

2 पतरस 2: 6–10 और सदोम और अमोरा के नगरों को विनाश का ऐसा दण्ड दिया, कि उन्हें भस्म करके राख में मिला दिया ताकि वे आनेवाले भक्तिहीन लोगों की शिक्षा के लिये एक **दृष्टान्त** बनें। (7) और **धर्मी लूत** को जो अधर्मियों के अशुद्ध चाल–चलन से बहुत दुखी था छुटकारा दिया। (8) क्योंकि वह धर्मी **उन के बीच में रहते हुए,** और उन के अधर्म के कामों को देख देखकर, और सुन सुनकर, हर दिन अपने सच्चे मन को **पीड़ित** करता था। (9) तो प्रभु के भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को **न्याय के दिन** तक दण्ड की दशा में रखना भी जानता है।

- **जहां** और **जिन** लोगों के साथ लूत और उसका परिवार रहते थे उन लोगों के साथ उन्होंने गहरा समझौता कर लिया था। विवरण के लिए उत्पत्ति 19 देखें।

2 पतरस 3:10–14 परन्तु **प्रभु का दिन** चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाऐंगे। (11) तो जब कि ये सब वस्तुएं, इस रीति से पिघलनेवाली हैं, तो तुम्हें **पवित्र चालचलन और भक्ति** में कैसे मनुष्य होना चाहिए। (12) और **परमेश्वर के उस दिन** की बाट किस रीति से जोहना चाहिए और उसके जल्द आने के लिये कैसा यत्न करना चाहिए; जिस के कारण आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे।(13) पर उस की प्रतिज्ञा के अनुसार **हम** एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस **देखते हैं** जिन में **धार्मिकता वास करेगी।**। (14) इसलिये, हे प्रियो, जब कि तुम इन बातों की आस देखते हो तो **यत्न करो** कि तुम **शान्ति** से उसके साम्हने **निष्कलंक** और **निर्दोष** ठहरो।

2 पतरस 3:17–18 इसलिये हे प्रियो तुम लोग पहिले ही से इन बातों को जानकर चौकस रहो, ताकि अधर्मियों के भ्रम में फंसकर अपनी **स्थिरता** को हाथ से कहीं खो न दो। (18) पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के **अनुग्रह** और **पहचान** में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।।

मेरी गवाही : **यीशु** के लहू ने मुझे **शुद्ध** किया, मुझे **पवित्र** ठहराया है तथा **सेवक** और **राजदूत** के रुप में **अपने** विशेष कार्य हेतु मुझे अलग किया।

1 पतरस 1:13–16 अतः कार्य करने के लिए **अपनी बुद्धि की कमर कस कर** आत्मा से संयमित हो जाओ। **अपनी पूरी आशा उस अनुग्रह पर रखो** जो तुम्हें यीशु मसीह के प्रकट होने पर दिया जाने वाला है। (14) और **आज्ञाकारी** बालकों की नाई अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के **सदृश न बनो।** (15) पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही **तुम भी** अपने **सारे चाल चलन** में **पवित्र** बनो। (16) क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।

VI. उसका लहू हमें शुद्ध करता है :

यीशु के लहू की एक और अत्यावश्यक देन हमारे दिन प्रतिदिन के पापों **निरन्तर साफ करना** है जो परिणामस्वरुप हमें यीशु तथा एक दूसरे के साथ **संगति/सहभागिता/ घनिष्ठता** प्रदान करता है।

पढ़ें : 1 यूहन्ना 1:5–10

1 यूहन्ना 1:7 पर **यदि** जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही **हम भी ज्योति में चलें**, तो एक दूसरे से **सहभागिता** रखते हैं; और उसके पुत्र **यीशु मसीह का लहू** हमें **सब पापों से शुद्ध करता है।**

कृपया ध्यान दें: यीशु के लहू का यह गुण साफ करने के लिए है, जिसका परिणाम यीशु तथा एक दूसरे के साथ संगति है।

यह इस बात पर **प्रतिबन्धित** है कि :

(1) **हम क्या करते हैं – हम कैसे रहते हैं – हमारा चाल चलन कैसा है** (ज्योति में)। यह हमारी गवाही का बहुत महत्वपूर्ण भाग है। न केवल हम जो बोलते हैं परन्तु हम दिन प्रति दिन कैसे रहते हैं।

यूहन्ना 5:36 परन्तु **मेरे पास जो गवाही है** वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है: क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही **काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं,** कि पिता ने मुझे भेजा है।

कुलुस्सियों 3:17 और **वचन** से या **काम** से **जो कुछ भी करो** सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।।

(2) तथा यह इस बात पर भी प्रतिबन्धित है : "यदि हम अपने पापों को मान लें।" 1 यूहन्ना 1:9

शुद्ध करना तब एक निरन्तर, प्रतिदिन की अवस्थिति है जो इस बात पर निर्भर है कि(1) **हम कैसे रहते हैं** और (2) **अपने पापों को मान कर**। हम शुद्ध हो कर संगति में हो सकते हैं या **फिर** हम नहीं हों।

शुद्ध होना हमारे **अनन्त गन्तव्य** को प्रभावित **नहीं करता** परन्तु यह प्रभु तथा एक दूसरे के साथ हमारी संगति, हमारी सहभागिता को प्रभावित करता है।

यदि हम शुद्ध **नहीं** हैं और ज्योति में हैं – तो हमने "उस दुष्ट" को अवसर दिया है कि वह हम तक पहुंचे। (2 कुरिन्थियों 2:10–11; इफिसियों 4:25–27)

हालांकि क्षमा, जो अनन्त छुटकारा देती है हमें **केवल** एक ही शर्त पर **दी गई** और **हम उसे पा सकते हैं : यदि तुम विश्वास करोगे** (यूहन्ना 3:16; 11:40; प्रेरितों के काम 8:37 और अन्य कई)

इफिसियों 1:7 **हम को** उस में **उसके लहू** के द्वारा **छुटकारा**, अर्थात् अपराधों की **क्षमा, उसके** उस **अनुग्रह के धन** के अनुसार मिला है।

इब्रानियों 9:12 पर **अपने ही लहू** के द्वारा **एक ही बार** पवित्र स्थान में प्रवेश किया, और **अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।**

1 यूहन्ना 1:5–10 में शुद्धता संगति के लिए है, **न कि अनन्त जीवन के लिए।**

उदाहरण: लूका 22:24–32 उनका वाद-विवाद, प्रभु के तथा एक दूसरे के साथ उनकी संगति में रुकावट, अवरोध लाया जिसने शैतान के द्वार खोला कि वह दुष्टाई का कार्य करे। 2 कुरि 2:10–11; इफिसियों 4:25–27

चाहे हम यीशु के लहू से शुद्ध होने का **दावा** करें, **यदि** हम **शर्तों को पूरा नहीं कर रहे** तो हम अपने प्रभु के साथ **संगति** और **घनिष्ठता** की सम्पूर्णता का आनन्द **नहीं** ले पाएंगे जो वह हमारे साथ चाहता और इच्छा करता है।

यीशु का लहू अन्धकार में शुद्ध नहीं करता परन्तु केवल तब जब हम ज्योति में चलते हैं। यह सच्चाई – ईमानदारी और खराई में है। और जब कभी हम पाप कर बैठते हैं – तो हम तुरन्त प्रभु के सामने और जितने इससे सम्बन्ध रखते हैं, मान लें हैं।

निरन्तर पापों को मान लेने को हम "आत्मिक श्वास" लेना भी कह सकते हैं।
पापों को मान कर बाहर (श्वास) फेंकना – क्षमा और शुद्ध होने को अन्दर (श्वास) लेना।

गंदगी से बचे रहने और साफ रहने के लिए हमें यीशु के लहू से निरन्तर साफ होने की आवश्यकता है। अपने पापमय विचारों, शब्दों और कार्यों को निरन्तर मानते रहना।

ज्योति में चलने के अन्तर्गत दो क्रियाएं सम्मलित हैं :

1. परमेश्वर के वचन की **आज्ञाकारिता** में चलना
   भजन संहिता 119:105 तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।

2. तथा अपने सह विश्वासी के साथ सच्चाई और प्रेम में चलना

2 तीमुथियुस 2:19–22 (21) यदि कोई अपने **आप को** इन से **शुद्ध** करेगा, तो वह **आदर** का बरतन, और **पवित्र** ठहरेगा; और **स्वामी के काम आएगा**, और हर भले काम के लिये **तैयार** होगा।

प्रेरित यूहन्ना इस विषय पर अपनी पत्री को इस प्रकार से समाप्त करते हैं :

1 यूहन्ना 5:18 हम जानते हैं, कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है, वह पाप नहीं करता; जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, **उसे** वह **बचाए रखता है** (या : **स्वयं को बचाए रखता है**): और **वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।**

- "स्वयं को बचाए रखना" सही अनुवाद है।
- इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है मानो परमेश्वर उसे बचाए रखता है : "जो(यीशु) परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसे वह (यीशु) बचाए रखता है।
- मेरे विचार से, "ज्योति में चलने" और "पापों को मान लेने" पर यूहन्ना द्वारा दिए गए बल को ध्यान में रखते हुए, सबसे अच्छा अनुवाद "स्वयं को बचाए रखना" होगा और जब हम ऐसा करते हैं तो **वह दुष्ट हमें छू भी नहीं सकता।**

हमारी गवाही होनी चाहिए:

मैं ज्योति में चल रहा हूं और यीशु का लहू सब पापों से मुझे शुद्ध करता है तथा "वह दुष्ट" मुझे छू नहीं सकता।

VII. यीशु का लहू निरन्तर हमारी मध्यस्थता करता है।

इब्रानियों 12:22–24 पर तुम सिय्योन के पहाड़ के पास, और जीवते परमेश्वर के नगर स्वर्गीय यरूशलेम के पास। ...(24) और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और **छिड़काव के उस लहू** के पास आए हो, जो हाबिल के लहू से **उत्तम बातें कहता है**।

कैन ने अपने भाई हाबिल की हत्या की। इसके बाद उसने उसकी जिम्मेवारी से हटने का प्रयास किया परन्तु परमेश्वर ने कहा: तू ने क्या किया है ? तेरे भाई का लहू भूमि में से मेरी ओर **चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है !** उत्पत्ति 4:10

हाबिल के लहू ने बदला लेने की दोहाई दी। यीशु का लहू उत्तम बातें बोलता है – परमेश्वर के सामने **निरन्तर दया** और **क्षमा** की बातें **बोलता** है – हमारी मध्यस्थता के लिए।

यीशु का लहू सदा उपस्थित है – अनन्त है – हमें धर्मी ठहराने का प्रबन्ध – धार्मिकता, छुटकारे, क्षमा, मेल मिलाप, पवित्र ठहराने और शुद्ध करने के लिए।

जैसा परमेश्वर ने कहा : निर्गमन 12:13 और जिन घरों में तुम रहोगे उन पर **वह लहू तुम्हारे निमित्त चिन्ह ठहरेगा**; अर्थात् **मैं उस लहू को देखकर** तुम को **छोड़ जाऊंगा**, और जब मैं मिस्र देश के लोगों को मारूंगा, तब वह विपत्ति तुम पर न पड़ेगी और तुम नाश न होगे।

रोमियों 8:31-39 सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? **यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?** (32) जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा? (33) परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा? परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहरानेवाला है। (34) फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? **मसीह** वह है जो मर गया वरन मुर्दों में से जी उठा, और परमेश्वर की दहिनी ओर है, और **हमारे लिये निवेदन भी करता है**। (35) **कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?** क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? (36) जैसा लिखा है,

"कि तेरे लिये हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होनेवाली भेंड की नाई गिने गए हैं।"

(37) परन्तु **इन सब बातों में हम** उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, **जयवन्त से भी बढ़कर हैं**। (38) क्योंकि **मैं निश्चय जानता हूं**, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, (39) न गहिराई और न कोई और सृष्टि, **हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।।**

यह सब

परमेश्वर के मेमने

यीशु मसीह

के

लहू के कारण